ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

द्युमन्तं शुष्ममाभर। सामवेद 1325

हे शक्तिदायक प्रभो! हमें शुभ शक्ति दो।

O the Bestower of strength! Bistwo on us the strength that will bring glory.

वर्ष 37, अंक 13 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 10 फरवरी, 2014 से रविवार 16 फरवरी, 2014
विक्रमी सम्वत् 2070 सृष्टि सम्वत् 1960853114
दयानन्दाब्द : 189 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.orgèaryasandesh

समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं के अधिकारियों की सेवा में

महर्षि दयानन्द जी के 190वें जन्मोत्सव पर करें विशेष आयोजन

माननीय महोदय, सादर नमस्ते !
आशा है प्रभु कृपा से आप सपरिवार स्वस्थ एवं सानन्द होंगे।

विश्व की प्रत्येक आर्यसमाज, प्रतिनिधि सभा, संस्था तथा महर्षि दयानन्द से सम्बन्धित संस्थाओं द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म दिवस प्रति वर्ष आयोजित किया जाता है। किसी न किसी रूप में एक आम व्यक्ति तक अपना सन्देश पहुंचाते रहे हैं। गत वर्ष 2013 में जन्मोत्सव के अवसर पर दिल्ली में 60 से अधिक स्थानों पर मुख्य मार्गों/चौराहों पर प्रसाद वितरण के स्टाल लगाए गए। वहीं पर आने जाने वालों को **'महर्षि दयानन्द जी सरस्वती'** सचित्र छोटी जीवनी तथा **'आर्यसमाज के स्वर्णिम सूत्र'** नामक पत्रक वितरित किए गए। स्टालों पर बड़े-बड़े **शुभकामनाओं के बैनर** लगाए गए थे तथा माईक लगाकर ऋषिगाथा चलाई गई थी। आते-जाते समस्त लोगों को प्रसाद एवं साहित्य वितरित किया गया।

एक अनुमान के अनुसार **एक स्टाल से 3-4 हजार लोगों तक** साहित्य पहुंचा, जो लोग बिल्कुल आर्यसमाज के लिए नए सम्पर्क में आए थे। अगर सब आर्यसमाजों के द्वारा लगाए गए स्टालों से ऐसे ही साहित्य वितरित हो जाए तो आप स्वयं विचारें कि हम सब मिलकर एक ही दिन में **"दस लाख"** लोगों तक **केवल दिल्ली के दिल्ली में ही** अपनी बात पहुंचा सकते हैं। आवश्यकता है तो केवल एक अच्छी योजना की। अत: मेरा आपसे अनुरोध है कि इस वर्ष इस कार्य को एक योजना बनाकर करें, जिससे जन सामान्य को महर्षि दयानन्द जी के जन्मोत्सव की जानकारी प्राप्त हो।

सभा की ओर दानी महानुभावों के सहयोग से इस वर्ष भी प्रमुख समाचार पत्रों तथा टीवी चैनलों पर महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव पर शुभकामना के विज्ञापन प्रसारित कराए जाएंगे। इस अवसर पर आर्यसमाजों की ओर से सामूहिक विज्ञापन भी **हिन्दुतान** (अंग्रेजी व हिन्दी) में तथा **दैनिक जागरण** में प्रकाशित कराए जाएंगे। – शेष पृष्ठ 5 पर

आर्यसमाज में विशेष यज्ञ का आयोजन करें तथा क्षेत्र के विशिष्ट महानुभावों को आमन्त्रित करें

निकट के बाजार, चौक/चौराहे पर ऋषि लंगर, प्रसाद वितरण एवं साहित्य वितरण करें।

दैनिक समचार पत्र में अपनी आर्यसमाज/संस्था की ओर से जन्मदिवस पर शुभकामना विज्ञापन दें

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला- 2014 के अवसर पर प्रगति मैदान में

वृहद् स्तर पर वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार

अधिकाधिक लोगों तक सत्यार्थ प्रकाश पहुंचाने के लक्ष्य में सहयोगी बनें

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में मित्रों एवं सम्बन्धियों के साथ पहुंचकर कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें

स्टाल उद्घाटन
15 फरवरी, 2014
प्रात: 11 बजे

हिन्दी साहित्य
हॉल नं. 18 स्टाल : 119

अंग्रेजी साहित्य
हॉल नं. 10 स्टाल : 27

मेला समापन
23 फरवरी, 2014
रात्रि 8 बजे

आर्यजन ईमेल, एस.एम.एस.,फेस बुक, ट्वीटर आदि के माध्यम से स्टाल नं. की सूचना पहुंचाकर जन-साधारण को आमन्त्रित करने में सहयोगी बनें

आर्यसमाज कोई संस्था, मत, पंथ, साम्प्रदाय का नाम नहीं अपितु महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा आरम्भ किए गए गए ऐसे आन्दोलन का नाम है जो भारत की पुरातन संस्कृति को पुनर्स्थापित करने के लिए सतत् प्रयत्नशील है। आर्यसमाज को प्रकाशित प्रकाशित तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जिन ग्रन्थों को आर्ष कहा है वे सब आर्यसमाज की साहित्यिक पूंजी हैं, हमारी धरोहर हैं। इस साहित्य को आज की युवा पीढ़ी जोकि पाश्चात्य रंग में लगभग पूर्णत: रंग चुकी है को इसके महत्व एवं उपयोगिता को समझाने, बताने एवं इसके लिए जिज्ञासु बनाने की आज अत्यधिक आवश्यकता है। नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला हमें तथा युवा पढ़ी को एक मंच प्रदान करता है जहां यह सब सत् साहित्य और साहित्य प्रेमी चाहें वे पश्चिमी विचार जगत से प्रेरित हों या भारतीय संस्कृति से दोनों की उपलब्ध होते हैं। आवश्यकता है उनमें जिज्ञासाभाव पैदा करने एवं अपनी ओर आकर्षित करने की। इस युवा मन में घर कर चुके हर प्रश्न का उत्तर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की अनमोलकृति सत्यार्थ प्रकाश में उपलब्ध है। जिस सत्यार्थ प्रकाश को वैज्ञानिक गुरुदत्त विद्यार्थी ने – शेष पृष्ठ 6 पर

अपनी ओर से सत्यार्थ प्रकाश पर सब्सिडी हेतु सहयोग जमा करें
'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 910010009140900
एक्सिज बैंक, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

वेद-स्वाध्याय

पति-पत्नी सदुपदेश ग्रहण करें

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

उष्टारेव फर्वरेषु श्रयेथे प्रायोगेव श्वात्र्या शासुरेथः। दूतेव हि ष्ठो यशसा जनेषु माप स्थातं महिषेवावपानात्।। ऋग्वेद 10/106/2

अर्थ—हे दम्पती! तुम दोनों **(जैसे)** भूख से व्याकुल साथ रहने वाले दो पशु **(फर्वरेषु)** घास के मैदान में आश्रय लेते हैं वैसे ही राग, द्वेष, काम-दाह से पीड़ित हुये आध्यात्मिक भोजन के लिये जंगलों में स्थित महात्माओं का सत्संग करो। जैसे दो धनी मित्र ***(प्रायोगा श्वात्र्या इव)*** व्यापार एवं व्यवहार में धन या सफलता प्राप्त होने पर ***(शासुरेथः)*** किसी सिद्ध महात्मा के पास श्रद्धा से आशीर्वाद लेने जाते हैं वैसे ही तुम स्त्री-पुरुष सन्तान धन की प्राप्ति होने पर गृहस्थ धर्म के उपदेश करने वाले पुरोहित के पास जाकर मार्गदर्शन लो। ***(दूतेन हि)*** जैसे दूत राजा को सन्देश पहुँचाकर उसके कृपा पात्र बनते हैं, वैसे ही ***(यशसा जनेषु स्थः)*** तुम लोगों में अपनी यश-कीर्ति से प्रिय बनो ***(महिषा इव)*** जैसे भैंसें ***(अव पानात्)*** पानी के तालाब में जाकर बाहर आना नहीं चाहतीं वैसे ही तुम दोनों ज्ञानामृत के पान से कभी पृथक् मत होवो।

गृहस्थ आश्रम राष्ट्र-निर्माण का कारखाना है जहाँ सुयोग्य बच्चों का निर्माण कर उन्हें राष्ट्र की सेवा करने के लिये भेज दिया जाता है। जिस कारखाने में अच्छी मशीनें और कार्य करने वाले कुशल श्रमिक हों उसका उत्पादन सभी लोगों की पसन्द होता है। ठीक इसी भाँति मनुस्मृति में कहे अनुसार जितेन्द्रिय स्त्री-पुरुषों को ही अक्षय सुख के लिये गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करना चाहिये। श्रीराम जैसे मर्यादा पुरुषोत्तम बनाने के लिये कौशल्या जैसी माता, प्रद्युम्न जैसे वीर, पराक्रमी और सुन्दर पुत्र को प्राप्त करने के लिये देवी रुक्मिणी और श्रीकृष्ण के समान १२ वर्ष ब्रह्मचर्य व्रत का पालन और शिवाजी सदृश शूरवीर योद्धा के लिये माता जीजाबाई जैसी वीरांगना होनी चाहिये। सन्तान अपने माता-पिता की ही छाया-प्रति होती है जिसे अपने अनुसार ढालने के लिये माता-पिता को स्वयं उस सांचे में ढलना होगा।

योग्य सन्तान के अतिरिक्त पुरुषार्थ चतुष्टय—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति के लिये गृहस्थाश्रम की मर्यादा में पति-पत्नी बंधते हैं। इसलिये इस आश्रम में भी संयमित जीवनचर्या से ही इस उद्देश्य की प्राप्ति हो सकती है। वेद इन मर्यादाओं का पालन करने के लिये दम्पती को उपदेश और दिशा निर्देश दे रहा है। हे दम्पती! तुम दोनों जैसे भूख-प्यास से व्याकुल दो पशु घास के मैदान में जाकर अपनी बुभुक्षा को शान्त करते हैं वैसे ही तुम **उष्टारेव फर्वरेषु श्रयेथे** जो तुम्हारी ज्ञान-पिपासा को शान्त कर सके अथवा वासनाओं से पीड़ित होने पर शान्ति प्राप्ति के लिये जंगलों में स्थित सन्तजनों के चरणारविन्द में जाकर मन की सुख-शान्ति प्राप्त करो। पहले लोग तीर्थों में साधु-महात्माओं के दर्शनार्थ जाते थे, उसके पीछे भी यही प्रयोजन था। यद्यपि आज इन तीर्थों का रूप विकृत हो गया है।

प्रायोगेव श्वात्र्या शासुरेथः जैसे दो व्यापारी किसी व्यापार या अन्य कार्य में धन लगाते हैं और उसमें सफलता प्राप्त कर लेने के पश्चात् किसी सिद्ध पुरुष के पास श्रद्धान्वित हो आशीर्वाद लेने के लिये जाते हैं इसी भाँति तुम दोनों जब भी पुत्र-धन की प्राप्ति अथवा अन्य शुभ अवसर पर गृहस्थ धर्म का उपदेश करने वाले अपने कुलगुरु या पुरोहित के पास अवश्य जाओ और सन्तान का पालन-पोषण कैसे करें तथा उसे किस प्रकार सुशिक्षित एवं चरित्रवान् बनायें, इस विषय में मार्गदर्शन प्राप्त करो। सन्तान को उत्पन्न करना सरल है परन्तु उत्पन्न हो जाने के पश्चात् उसे सुशिक्षा, सत्संग, सदाचार, संयम की दिनचर्या में चलाना और विद्वान् बनाना इतना सरल नहीं है। माता-पिता की इच्छा तो रहती है कि हमारे पुत्र-पुत्रियां सदाचारी और पुरुषार्थी बनें परन्तु इसके लिये पहले उन्हें अपने जीवन में झांकना होगा। बालक कच्चा घड़ा होता है। कच्चे घड़े को तोड़कर जिस आकृति में उसे ढालना है वैसी ही आकृति कुम्भकार के चक्र पर साकार हो उठती है। घड़े को पका देने के पश्चात् वह टूट जायेगा परन्तु मनोनुकूल वातावरण में ढलने का साहस नहीं कर पायेगा।

दूतेव ष्ठो यशसा जनेषु जिस भाँति राजा के दूत दूर-दूर के गोपनीय समाचार राजा तक पहुँचा कर प्रशंसा और पुरस्कार प्राप्त करते हैं वैसे ही जिस समाज में तुम रहते हो, उनके प्रिय बनो। दूसरों का प्रिय बनने का उपाय यही है कि उनसे मधुर सम्भाषण, उनके दुःखों में हाथ बटाना और आपत्तिकाल में उनकी सहायता बिना किसी स्वार्थ के करना, उनकी सुविधाओं का का मान ही धन है। **कीर्तिर्यस्य स जीवति** जिसके गुणों का गौरव-गान लोग करते हैं उसी का जीवन सफल है। निःस्वार्थ प्रेम सबको अपना बना लेता है।

मापस्थातं महिषेवावपानात्—जैसे भैंसें पानी में प्रविष्ट होकर वहीं जुगाली करती रहती हैं, बाहर निकलने का नाम ही नहीं लेती वैसे ही हे स्त्रीपुरुषो! आप ज्ञानामृत के सरोवर में डुबकी लगाने के लिये सिद्ध पुरुषों एवं आध्यात्मिक प्रवचन जहाँ होते हैं, वहाँ अवश्य ही जाओ। सत्संगति की महिमा सभी ने गायी है।

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति। चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्।। (नी०श०)

सत्संगति से बुद्धि की जड़ता दूर होती है। पाप-पंक धुल जाता है। वाणी में सत्य का व्यवहार होने लगता है। मान-सम्मान की प्राप्ति और पाप-भाव दूर होता है। सत्संगति में जाने से चित्त प्रसन्न रहता है और सभी लोग प्रशंसा करते हैं। सत्संगति पुरुषों के लिये क्या नहीं करती अर्थात् सभी सद्गुणों को देने वाली है। मलयाचल में स्थित चन्दन-वन में कुकाष्ठ भी चन्दन-गन्ध अपने तन में बसा लेते हैं। कांच स्वर्णाभूषणों में जड़ा हुआ मरकतमणि के समान सुशोभित होता है। इसी भाँति सत्संग से मूर्ख भी विद्वान् बन जाता है।

- ***क्रमशः***

आर्यसमाज के गीतों को बनाएं अपनी मोबाइल ट्यून (CallerTunes)

आर्यसमाज के गीतों को अपनी मोबाइल ट्यून बनाने के लिए आज ही डाउनलोड करें और अन्य महानुभावों को भी प्रेरित करें

Sr. No.	Song Title	Voda	Idea	Airtel	Tata CDMA	Tata Doco	BSNL (North)	MTS	Uninor	Tata Indicome
1	आई फौज दयानन्द वाली	10444132	720080	543211007382	376609	254930	173340	77772509	0387407	1242047
2	ये प्रभु हम तुम से	10444133	720084	543211007383	376614	254931	173341	77772510	0387408	1242048
3	होता है सारे देश का	10444134	720081	543211007384	376615	254932	173342	77772511	0387409	1242049
4	हम को सब दुनिया जाने	10444135	720082	543211007385	376616	254933	173343		0387410	1242050
5	जो होली सो होली	10444136	720090	543211007386	376622	254934	173344	77772512	0387411	1242051
6	पूजनीय प्रभु हमारे	10444137	720105	543211007387	376629	255260	173345	77772513	0387412	1242052
7	सुनो-सुनो ये दुनिया वालो	10444138	720115	543211007388	376639	254935	173346	77772514	0387413	1242053
8	यूँ तो कितने ही महापुरुष	10444139	720111	543211007389	376644	254936	173347	77772515	0387414	1242054
	दिल्ली चलो (सम्मेलन गीत)			543211462723			1721306			

यदि आप इन गीतों में से किसी एक धुन को अपनी मोबाइल ट्यून बनाना चाहते हैं अपने मोबाइल से निम्न प्रकार लिखकर मैसेज करें

Voda- type "CT code"send sms to 56789
Airtel- Dial Code and Say " YES"
Tata docomo- type "CT code" send sms to 543211
MTS- type "CT code" send sms to 55777
Idea- type "DT Code"send sms to 55456
Tata cdma- type "Wt code" send sms to 12800
BSNL- type "BT code" send sms to 56700
UNINOR - type "CT code" send sms to 51234
TATA Incdicome - type "WT code" send sms to 12800

उदाहरण के तौर पर आपके पास Idea का कनेक्शन है और आप "Aai Fauj Dayaanand Wali" गीत की धुन अपने Idea मोबाईल पर कॉलर ट्यून बनाना चाहते हैं, तो आप अपने आइडिया फोन से टाइप करें "DT 720080" और 55456 पर SMS कर दें।

अब आर्यसमाज के गीतों की धुनें यूनिनॉर एवं टाटा इंडिकॉम नेटवर्क पर भी उपलब्ध हैं

अपने मोबाइल को भी बनाएं आर्यसमाज के प्रचार का माध्यम - आप चाहे फोन करें या सुनें हर ओर आर्यसमाज के गीत की बजें

617वीं जयन्ती
(14 फरवरी, 2014) पर

गुरुजी की आर्यधर्म निष्ठा व परस्पर उद्देश्यों की समानता

'सन्त गुरु रविदास और आर्य समाज'

भारत के प्रसिद्ध सन्तों में शामिल गुरु रविदासजी ने अपनी अन्त: प्रेरणा पर सांसारिक भोगों में रूचि नहीं ली। बचपन में ही वैराग्य-वृति व धर्म के प्रति लगाव के लक्षण उनमें प्रकट हुए थे। अध्यात्म के प्रति गहरी रूचि उनमें जन्मजात थी और जब कहीं अवसर मिलता तो वह विद्वानों व साधु-सन्तों के उपदेश सुनने पहुंच जाया करते थे। उस समय की अत्यन्त प्रतिकूल सामाजिक व्यवस्थायें व घर में उनके आध्यात्मिक कार्यों के प्रति गहन उपेक्षा का भाव था। बचपन में ही धार्मिक प्रकृति के कारण उनके पिता बाबा सन्तोख दास ने उन्हें अपने पारिवारिक व्यवसाय शू-मेकर का कार्य करने की प्रेरणा की व दबाव डाला। जब इसका कोई विशेष असर नहीं हुआ तो कम उम्र में आयु. लोनादेवी जी से उनका विवाह कर दिया गया। इस पर भी उनकी धार्मिक लगन कम नहीं हुई। वह अध्यात्म के मार्ग पर आगे बढ़ते रहे जिसका परिणाम यह हुआ कि आगे चलकर वह अपने समय के विख्यात सन्त बने। सन्त शब्द का जब प्रयोग करते हैं तो अनुभव होता है कि कोई ऐसा ज्ञानी व्यक्ति जिसे वैराग्य हो, जिसने अपने स्वार्थों को छोड़कर देश व समाज के सुधार, उन्नति व उत्थान को अपना मिशन बनाया हो और इसके लिए जो तिल-तिल कर जलता हो जैसा कि दीपक का तेल जलता है। मनुष्य जीवन दो प्रकार का होता है एक भोग प्रधान जीवन व दूसरा त्याग से पूर्ण जीवन। सन्त का जीवन सदैव त्याग प्रधान ही होगा। भोग या तो होंगे नहीं या होगें तो अत्यल्प व जीवन जीने के लिए जितने आवश्यक हों, उससे अधिक नहीं। ऐसे लोग न तो समाज के लोगों व अपने अनुयायियों को ठगते हैं, न पूर्जी व सम्पत्ति एकत्र करते हैं और न सुविधापूर्ण जीवन ही व्यतीत करते हैं। हम अनुभव करते हैं कि इसके विपरीत जीवन शैली भोगों में लिप्त रहने वाले लोगों की होती है। ऐसा जीवन जीने वाले को सन्त की उपमा नहीं दी सकती। सन्त व गुरु का जीवन सभी लोगों के लिए आदर्श होता है और एक प्रेरक उदाहरण होता है। गुरु व सन्तजनों के जीवन की त्यागपूर्ण घटनाओं को सुनकर बरबस शिर उनके चरणों में झुक जाता है। उनके जीवन की उपलब्ध घटनाओं पर दृष्टि डालने से लगता है कि वह साधारण व्यक्ति नहीं थे अपितु उनमें ईश्वर के प्रति अपार श्रद्धा की भावना थी व समाज के प्रति भी असीम स्नेह व उनके कल्याण की भावना से वह समाहित थे। ऐसा ही जीवन गुरु रविदास का था।

इस लेख के चरित्रनायक सन्त गुरु रविदास का जन्म सन् 1377 ईस्वी में अनुमान किया जाता है। उनकी मृत्यु के बारे में अनुमान है कि वह 1527 में दिवगंत हुए। इस प्रकार से उन्होंने लगभग 130 वर्ष की आयु प्राप्त की। जन्म वर्तमान उत्तर प्रदेश के वाराणसी के विख्यात धार्मिक स्थल काशी के पास गोवर्धनपुर स्थान में हुआ था। यह काशी वही स्थान है जहां आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आज से 144 वर्ष पूर्व, सन् 1869 ई. में काशी के सनातनी व पौराणिक मूर्ति पूजकों से वहां के प्रसिद्ध स्थान आनन्द बाग में लगभग 50,000 लोगों की उपस्थिति में काशी के राजा ईश्वरी नारायण सिंह की मध्यस्थता व उनके सभापतित्व में लगभग 30 शीर्ष विद्वान पण्डितों से एक साथ शास्त्रार्थ किया था। स्वामी दयानन्द का पक्ष था कि सृष्टि की आदि में ईश्वर प्रदत्त ज्ञान वेदों में ईश्वर की मूर्तिपूजा का विधान नहीं है। काशी के पण्डितों को यह सिद्ध करना था कि वेदों में मूर्तिपूजा का विधान है। इतिहास साक्षी है अकेले दयानन्द के साथ 30-35 पण्डित अपना पक्ष सिद्ध न कर सकने के कारण पराजित हो गये थे और आज तक भी कोई पौराणिक, सनातन धर्मी व अन्य कोई भी वेदों से मूर्ति पूजा को सिद्ध नहीं कर पाया। हम एक बात अपनी ओर से भी यहां यह कहना चाहते हैं कि सारा हिन्दू समाज फलित ज्योतिष की चपेट में है। फलित ज्योतिष का विधान भी सब सत्य विद्याओं की पुस्तक चारों वेदों में नहीं है। इसके लिए मूर्तिपूजा जैसा बड़ा शास्त्रार्थ तो शायद कभी नहीं हुआ। हो सकता है कि इसका कारण यह मान्यता रही हो कि सभी पाखण्डों व अन्ध-विश्वासों का मुख्य कारण मूर्तिपूजा है और इसकी पराजय में ही फलित ज्योतिष भी मिथ्या सिद्ध माना जायेगा। महर्षि दयानन्द ने अपने कार्यकाल में फलित ज्योतिष का भी प्रमाण पुरस्सर खण्डन किया। आज जो भी बन्धु फलित ज्योतिष में विश्वास रखते हैं, दूरदर्शन व अन्य साधनों से तथाकथित ज्योतिषाचार्य प्रचार करते हैं व ज्योतिष जिनकी आजीविका है, उन पर यह उत्तरदायित्व है कि वह फलित ज्योतिष के प्रचार व समर्थन से पूर्व इसे वेदों से सिद्ध करें। फलित ज्योतिष सत्य इस लिए नहीं हो सकता कि यह ईश्वरीय न्याय व्यवस्था व कर्म-फल सिद्धान्त 'अवश्यमेव हि भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभं' (गीता) में सबसे बड़ा बाधक है। ईश्वर के सर्वशक्तिमान होने से यह स्वत: असत्य सिद्ध हो जाता है। सब सत्य विद्याओं के आका ग्रन्थ वेदों में यदि फलित ज्योतिष का विधान नहीं है तो इसका अर्थ है कि फलित ज्योतिष सत्य विद्या न होकर काल्पनिक व मिथ्या सिद्धान्त व विश्वास है। हम समझते हैं कि गुरु रविदास जी ने अपने समय में वही कार्य करने का प्रयास किया था जो कार्य महर्षि दयानन्द ने 19वीं शताब्दी के अपने कार्यकाल में किया था। इतना अवश्य कहना होगा कि महर्षि दयानन्द का विद्या का कोश सन्त रविदास जी से बड़ा था जिसका आधार इन दोनों महापुरुषों की शिक्षायें व महर्षि दयानन्द सरस्वती के सत्यार्थ प्रकाश, वेदभाष्य सहित ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका, संस्कार विधि, आर्याभिविनय व अन्य ग्रन्थ हैं। कभी कहीं किन्हीं दो महापुरुषों की योग्यता समान नहीं हुआ करती। लेकिन यदि कोई व्यक्ति अन्धकार व अज्ञान के काल में व विपरीत परिस्थितियों में अपने पूर्वजों के धर्म पर स्थित रहता है और त्यागपूर्वक जीवन व्यतीत करते हुए लोगों को अपने धर्म पर स्थित रहने की शिक्षा देता है तो यह भी जाति व देश के हित में बहुत बड़ा पुण्य कार्य होता है। गुरु रविदास जी ने विपरीत जटिल परिस्थितियों में जीवन जिया व मुस्लिम काल में स्वधर्म में स्थित रहते हुए लोगों को स्वधर्म में स्थित रखा, यह उनका बहुत बड़ा योगदान है। यह तो निर्विवाद है कि महाभारत काल के बाद स्वामी दयानन्द जैसा विद्वान अन्य कोई नहीं हुआ। अन्य जो हुए उन्होंने नाना प्रकार के वाद दिये परन्तु 'वेदों का सत्य वाद - त्रैतवाद' तो महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ही देश व संसार को दिया है जो सृष्टि की प्रलय तक विद्वानों व विवेकीजनों का आध्यात्मिक जगत में मुख्य व एकमात्र मान्यता व सिद्धान्त रहेगा।

पहले गुरुजी के परिवार के बारे में और जान लेते हैं। उनकी माता का नाम कलशी देवी था। जाति से गुरुजी कुटबन्धला जाति जो चर्मकार जाति के अन्तर्गत आती है, जन्मे थे। उनका एक पुत्र हुआ जिसका नाम विजय दास कहा जाता है। उन दिनों सामाजिक व्यवहार में जन्म की जाति का महत्त्व आज से बहुत अधिक था व व्यक्ति का व्यक्तित्व गौण था। इस कारण गुरुजी, उनके परिवार, उनकी जाति व अन्य दलित जातियों के लिए जीवन जीना बहुत दूभर था। समाज में छुआछुत अथवा अस्पर्शयता का विचार व व्यवहार होता था। इन सब अनुचित कठोर सामाजिक बन्धनों को झेलते हुए भी आपने अपना मार्ग बना लिया और आत्मा व ईश्वर के अस्तित्व को जानकर स्वयं भी लाभ उठाया व दूसरों को भी लाभान्वित किया। सच कहें तो गुरुजी अपने समय में एक बहु प्रतिभाशाली एकमात्र आध्यात्मिक भावना व तेज से सम्पन्न महापुरुष व्यक्ति थे। यदि उन्हें विद्याध्ययन का अवसर मिलता तो वह समाज में कहीं अधिक प्रभावशाली क्रान्ति कर सकते थे। आगे चल कर हम उनकी कुछ शिक्षाओं, सिद्धान्तों तथा मान्यताओं को भी देखेंगे जो उस युग में वैदिक धर्म को सुरक्षा प्रदान करती हैं। गुरु रविदास जी ने ईश्वर भक्ति को अपनाया और अपना जीवन उन्नत किया। योग, उपासना व भक्ति शब्दों का प्रयोग आध्यात्मिक उन्नति के लिए किया जाता है। योग, स्वाध्याय व ईश्वर को सिद्ध हुए योगियों के उपदेशों का श्रवण व उनके प्रशिक्षण से ईश्वर का ध्यान करते हुए ईश्वर का साक्षात्कार करने को कहते हैं। उपासना भी योग के ही अन्तर्गत आती है इसमें भी ईश्वर के गुणों को जानकर स्तुति, प्रार्थना व उपासना से उसे प्राप्त व सिद्ध किया जाता है। उपासना करना उस ईश्वर का धन्यवाद करना है जिस प्रकार किसी से उपकृत होने पर सामाजिक व्यवहार के रूप में हम सभी करते हैं। उपासना का भी अन्तिम परिणाम ईश्वर की प्राप्ति, साक्षात्कार व जन्म-मरण से छूटकर मुक्ति की प्राप्ति है। भक्ति प्राय: अल्प शिक्षित लोगों द्वारा की जाती है जो योग व उपासना की विधि को भलीप्रकार व सम्यक रूप से नहीं जानते। भक्ति एक प्रकार से ईश्वर की सेवा में निरत रहना है। भक्त ईश्वर को स्वामी व स्वयं को सेवक मानकर ईश्वर के भजन व भक्ति गीतों को गाकर अपने मन को ईश्वर में लगाता है जिससे भक्त की आत्मा में सुख, शान्ति, उल्लास उत्पन्न होता है तथा भावी जीवन में वह निरोग, बल व शक्ति से युक्त, दीर्घ जीवी व यश व कीर्ति के धन से समृद्ध होता है। इसके साथ ही उसका मन व आत्मा शुद्ध होकर ईश्वरीय गुणों दया, करुणा, प्रेम, दूसरों को सहयोग, सहायता, सेवा, परोपकार आदि से भरकर उन्नति व अपवर्ग को प्राप्त होता है।

सन्त रविदास जी सन् 1377 में जन्में व सन् 1527 में मृत्यु को प्राप्त हुए। ईश्वर की कृपा से उन्हें काफी लम्बा जीवन मिला। यह उस काल में उत्पन्न हुए जब हमारे देश में अन्य कई सन्त, महात्मा, गुरु, समाज सुधारक पैदा हुए थे। गुरुनानक (जन्म 1497), तुलसीदास (जन्म 1497), स्वामी रामानन्द (जन्म 1400), सूरदास (जन्म 1478), कबीर (1440-1518), मीराबाई (जन्म 1478) आदि उनके समकालीन थे। गुरु रविदास जी के जीवन काल में सन् 1395-1413 में मैहमूद नासिरुद्दीन, सन् 1414-1450 में मुहम्मद बिन सईद तथा सन् 1451 से 1526 से लोदी वंश का शासन रहा। लोदी वंश के बाद सन् 1526 से 1531 बाबर का राज्य रहा। ऐसे समय में गुरु रविदास जी भी सनातन वैदिक धर्म के रक्षक के रूप में प्राचीन आर्य जाति के सभी वंशजों जिनमें दलित मुख्य रूप से रहे, धर्मोपदेश से उनका मार्गदर्शन करते रहे। धर्म रक्षा व समाज सुधार में उनका योगदान अविस्मरणीय है जिसे भुलाया नहीं जा सकता।

परमात्मा ने सभी मनुष्यों को बनाया है। ईश्वर एक और केवल एक है। जिन

- शेष पृष्ठ 6 पर

190वें जन्मोत्सव फाल्गुन कृष्ण दशमी तद्नुसार 24 फरवरी, 2014 पर विशेष

महर्षि दयानन्द सस्वती की दिव्य दृष्टि

- वेदाचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार

पशु केवल नेत्रों से देखता है- **पश्यतीति पशुः।** वह विचार नहीं कर सकता। मनुष्य विचारपूर्वक देखता है तथा करता है-मत्वा कर्माणि सीव्यति' ऋषि बिना नेत्रों के ही अत्र: प्रज्ञा से देखता है। इसीलिए यास्क मुनि कहते है- ऋषिदर्शनात्। यहां दर्शन का अर्थ दिव्य दृष्टि ही है, सामान्य देखना नहीं, सामान्य रूप में तो सभी देखते हैं। दिव्य दृष्टि केवल ऋषि में होती है।

दयानन्द ऐसे ही दिव्य दृष्टि सम्पन्न ऋषि थे, जिन्होंने प्रत्यक्ष के विषय में तो बहुत कुछ कहा है कि साथ ही ऐसे परोक्ष के विषय में भी कहा जहां पर सामान्य मानव की बुद्धि नहीं जा सकती। महर्षि दयानन्द ने कुछ ऐसी बाते कहीं जो उस समय कल्पित तथा उपहासास्पद प्रतीत होती थी। उन पर उस समय विश्वास करना इसलिए भी कठिन था क्योंकि विज्ञान भी तब तक वहां नहीं पहुंचा था। दयानन्द ने उन तथ्यों को अपनी ऋतम्भरा प्रज्ञा से देखा तथा उनके विषय में दृढ़तापूर्वक घोषणाएं की। ऋषि ही भूत तथा भविष्य के गर्भ में छिपे रहस्यों को भी प्रत्यक्ष की भांति ही देखता है। इस विषय में भर्त्तृहरि कहते हैं-

आविर्भूतप्रकाशानामनुप्लुतचेत साम्।अतीतानामत ज्ञानं प्रत्यआन्न विशिष्यते।।

अर्थात् जिन्हें ज्ञान प्रकाश प्राप्त हो गया है, ऐसे तपस्वी ज्ञानियों को वर्तमान के समान ही भूत तथा भविष्य का भी प्रत्यक्ष हो जाता है। ऋषि दयनन्द ऐसे ही तपस्वी, योगी तथा दिव्य दृष्टि सम्पन्न ज्ञानी थे कि उनकी उस समय की अविश्वसनीय घोषणाएं आज विज्ञान द्वारा सिद्ध की जा रही हैं यथा-

1. महर्षि ने कहा कि पृथिवी के समान अन्य ग्रहों पर भी सृष्टि है। उस समय यह बात सर्वथा नयी तथा चौकाने वाली थी, किन्तु आज विज्ञान ने इस बात को सिद्ध कर दिया है। सिद्धान्त रूप में यह मान ही लिया गया कि पृथिवी के अतिरिक्त अन्य ग्रहों पर भी निवास योग्य वातावरण है या रहा होगा तथा वहां अभी भी बसा जा सकता है। दयानन्द ने किस आधार पर इस बात को कहा था जिसका प्रत्यक्षी करण आज वैज्ञानिक अरबों-खरबों रुपया लगाकर कर रहे हैं।

2. आदि मानव कहां तथा किस रूप में उत्पन्न हुआ, यह गहनतम् प्रश्न है तथा इतिहास-पुरातत्व, विज्ञान आदि सभी विद्याओं की अपेक्षा रखता है महर्षि ने स्पष्ट रूप में लिखा कि आदि सृष्टि त्रिविष्टप अर्थात् तिब्बत पर हुयी तथा भूमि के अन्दर से ही वनस्पतियों की भांति युवा वर्ग उत्पन्न होकर बाहर आया। यह अमैथुनी सृष्टि थी। आज तिब्बत अतिशीत प्रधान है किन्तु वैज्ञानिक भी स्वीकार करते हैं कि सृष्टि के आरम्भ में वहां की जलवायु ऐसी न थी। अत: वही प्रदेश प्राणियों के निवासार्थ उपयुक्त था। आज परखनली से सन्तानोत्पत्ति करके वैज्ञानिकों ने यह भी सिद्ध कर दिया कि सन्तानोत्पत्ति के लिए माता-पिता का संयोग होना आवश्यक नहीं है। इसके लिए रजस् तथा शुक्र चाहिए। प्राणियों में वह भोजन द्वारा बनता है। भोजन वनस्पतियों तथा औषधियों से आता है। सृष्टि के आरम्भ में पृथिवी के गर्भ में भी यह कार्य

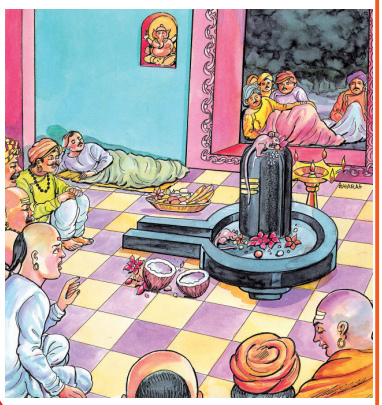

वनस्पतियों तथा औषधियों के द्वारा प्राकृतिक नियमों के अनुसार किया जा रहा था। आज डार्विन का सृष्टि रचना का सिद्धान्त अनेक आक्षेपों को झेल रहा है तथा असम्बद्ध प्रतीत होने लगा है। ऐसे में महर्षि का उक्त सिद्धान्त माननीय है।

3. महर्षि के समय तथा दौर्भाग्य से अभी भी कहीं-कहीं स्कूलों में पढ़ाया जाता है कि आर्य भारत में बाहर से आक्रान्ता के रूप में आये तथा लड़कर द्रविडों को दक्षिण में धकेल दिया। महर्षि ने सर्वप्रथम घोषणा की कि किसी भी संस्कृत ग्रन्थ में नहीं लिखा कि आर्य बाहर से आये। आर्य यहीं के मूल निवासी हैं तथा इस देश का प्राचीन नाम आर्यावर्त्त है। अब तो इतिहासज्ञ भी मानने लगे हैं कि आर्य इसी देश के मूल निवासी हैं।

4. वेदों के विषय में भी तब मिथ्या धारणा बना ली गयी थी कि वेद सामान्य जंगली लोगों की रचनाएं है, उनमें संसार के लोगों का इतिहास तथा नाम है। महर्षि ने इसे उलटते हुए साहसपूर्वक कहा कि वेद सभी सत्य विद्याओं की पुस्तक है, जिनका प्रादुर्भाव सृष्टि के आरम्भ में ही हुआ था। यह तथ्य भी आज सर्वमान्य हो चुका।

5. महर्षि ने यह भी घोषणा की थी कि यदि उन्हें साधन उपलब्ध कराये जाएं तो वे विमान बनाकर उड़ा सकते हैं। जिसने विज्ञान तो क्या अन्य आधुनिक विषयों की शिक्षा भी प्राप्त न की हो, उसकी यह घोषणा आश्चर्य से कम नहीं थी। वह भी उस समय जबकि पाश्चात्य जगत् विमान का नाम तक भी नहीं जानता था।

इन सबके द्वारा स्वत: सिद्ध है कि महर्षि दयानन्द दिव्य दृष्टि सम्पन्न ऋषि थे। उनकी यही दिव्य दृष्टि शिवरात्रि की रात्रि को शिव मन्दिर में प्रकट हुयी थी।

- बी-266, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034

।। ओ३म्।।

गुरुकुल के आयुर्वेदिक उत्पाद खरीदें गुरुकुल परम्परा को आगे बढ़ाएँ

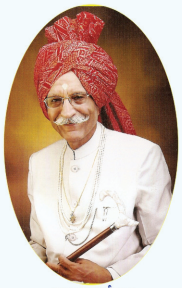

महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष, गु.कांगड़ी फार्मेसी

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

आपकी अपनी फार्मेसी

प्रमुख उत्पाद

गुरुकुल चाय, पायोकिल मंजन, च्यवनप्राश, मधुमेह नाशिनी, मधु (शहद), ब्राह्मी रसायन, आंवला रस, आंवला कैंडी, गुरुकुल शिलाजीत, द्राक्षारिष्ठ, रक्त शोधक, अश्वगंधारिष्ठ, सफेद सुरमा, गुलकन्द, महाभृंगराज तैल

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार, पो. गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) -249404
फोन - 0134-416073, 09719262983 (व्यावसायाध्यक्ष)

प्रथम पृष्ठ का शेष

जो आर्यसमाजें इस सामूहिक विज्ञापन में सहयोग करना चाहें वे **श्री सतीश चड्ढा जी से 9540041414** पर सम्पर्क करें। **सहयोग शुल्क 1000/- रुपये प्रति ब्लाक** निश्चित किया गया है। **व्यक्तिगत सन्देश** भी आप **अपनी फोटो के साथ** अधिकतम 70 शब्दों का भेजें तो वह भी प्रसारित किया जाएगा, जिसके लिए **प्रति सन्देश 5000/- रुपये** देय होंगे। इस प्रयास से हम अपना सन्देश एक पूरे पृष्ठ पर **10 लाख लोगों तक** पहुंचा सकेंगे। इसके लिए भी आप श्री सतीश चड्ढा जी से यथाशीघ्र सम्पर्क कर लेवें।

अत: आपसे निवेदन है कि आप अपने आर्यसमाज / संस्था का मुख्य द्वार तथा भवन लाइटों से इस प्रकार सजाएं जैसे दीवाली के दिन सजाया जाता है तथा बधाई के बैनर लगाए जाते हैं। इस कार्य को तो अवश्य ही करें। इसके साथ ही आप निम्न में से कोई एक कार्य चुन लेवें, जिससे आपका क्षेत्र भी प्रचार कार्य से वंचित न रहे –

1. अपने क्षेत्र के किसी ऐसे स्थान – **बाजार/चौक/मुख्य मार्ग पर लंगर/प्रसाद वितरण** का आयोजन करें जहां से प्रतिदिन अधिकाधिक लोग आते-जाते हों। आप चाहें तो अपने क्षेत्र की दो आर्यसमाजों को मिलाकर इस प्रकार का बड़ा आयोजन एक ही स्थान पर कर सकते हैं।

2. अपने क्षेत्र के **न्यूनतम 50 प्रमुख व्यक्तियों** – सांसद, निगम पार्षद, विधायक, डॉक्टर, अध्यापक, थानाध्यक्ष, बीट अधिकारी आदि को **महर्षि दयानन्द का चित्र एवं सत्यार्थ प्रकाश भेंट** करें।

3. अपने क्षेत्र के किसी एक **बड़े सरकारी या निजी स्कूल** में जाकर **महर्षि दयानन्द सरस्वती की लघु जीवनी (कॉमिक्स) का वितरण** करें। यह जीवनी सभा कार्यालय में 400/- सैंकड़ा की दर से उपलब्ध है।

उपरोक्त कार्यों में से कोई एक ही कार्य करने पर विशेष जोर इस लिए दिया जा रहा है कि आपका प्रभाव पूरे क्षेत्र में नजर आए। कई कार्य करने से ऐसा हो सकता है कि कोई भी कार्य पूर्णता प्राप्त न कर सके।

आशा है आप उपरोक्त में से किसी एक कार्य को और हो सके तो इन कार्यों को करके महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मदिवस पर महर्षि के नाम और सन्देश को जन साधारण में प्रसारित करें। इसके अलावा भी अन्य बहुत सा साहित्य 10-25% की छूट पर उपलब्ध है। आप उसे भी प्रचारार्थ क्रय कर सकते हैं।

आप अपनी आर्यसमाज की ओर से जो भी कार्यक्रम आयोजित करें, उसके चित्र तथा रिपोर्ट साप्ताहिक आर्यसन्देश में प्रकाशनार्थ अवश्य भेजें, जिससे संगठन के अन्य अंगों को भी इसकी प्रेरणा मिल सके। धन्यवाद सहित। – **विनय आर्य,** महामन्त्री,
मो0 : 9958174441

सभा कार्यालय में प्रचारार्थ उपलब्ध सामग्री

मानव कल्याण के स्वर्णिम सूत्र (आर्यसमाज की मान्यताएं) पत्रकों का अपने क्षेत्र में वितरण करें। पत्रक सभा कार्यालय में उपलब्ध है। इस पर आपकी आर्यसमाज का नाम लिखने का स्थान छोड़ा गया है। आप चाहें तो इस पर स्क्रीन प्रिंट करा सकते हैं या चाहें तो केवल अपनी आर्यसमाज की स्टैम्प लगा सकते हैं, जिससे क्षेत्र में आपकी आर्यसमाज का प्रभाव तथा परिचय बढ़ेगा। पत्रक सभा कार्यालय में 200/- रुपये सैंकड़ा की दर से उपलब्ध है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की लघु जीवनी सभा कार्यालय में 400/- सैंकड़ा की दर से उपलब्ध है। **एक निमन्त्रण** – मानव उत्थान एवं विश्वकल्याण के लिए निरन्तर प्रयासरत महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा संस्थापित आर्यसमाज की स्थापना एवं कार्यों का संक्षिप्त विवरण मात्र 650/- रुपये सैंकड़ा की दर से उपलब्ध है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजी.) में
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के उत्पाद उपलब्ध

1. आंवला कैंडी 500 ग्राम	160/-	9. सफेद सुरमा 1/2 ग्राम	32/-
(सूखा मुरब्बा) 1 किलो	286/-	10. महाभृंगराज तेल 250ग्राम	206/-
2. च्यवनप्राश स्पेशल 1 किलो	294/-	11. आंवला रस 1 लीटर	154/-
3. गुरुकुल चाय 400 ग्राम	201/-	12. मधुमेहनाशिनी 50 ग्रा.	259/-
4. गुरुकुल चाय 200 ग्राम	111/-		
5. गुरुकुल चाय 100 ग्राम	61/-		
6. गुलकन्द 250 ग्राम	114/-		
7. पायोकिल मंजन 60 ग्राम	88/-		
8. पायोकिल मंजन 25 ग्राम	42/-		

सभी उपलब्ध उत्पादों पर 10% की आकर्षक छूट। प्राप्त करने/अधिक जानकारी के लिए 9540040339 पर श्री विजय आर्य जी से सम्पर्क करें।

– महामन्त्री

सभा महामन्त्री द्वारा आर्यसमाज रांची द्वारा संचालित आर्य संस्थाओं का दौरा : आर्यसमाजें प्रेरणा लें

आर्यसमाज रांची (झारखण्ड) द्वारा संचालित आर्य बाल सदन जिसमें आदिवासी बच्चों के आवास और शिक्षा की व्यवस्था की गई है। श्री शत्रुघ्नलाल आर्य एवं बच्चों के साथ श्री विनय आर्य जी

गरीब रोगियों के लिए न्यूनतम मूल्यों पर भोजन की व्यवस्था। मात्र 10/- रुपये में एक समय का पैक भोजन, यह सेवा जिला अस्पताल के सामने की गई है। भोजन परोसते श्री शत्रुघ्नलाल आर्य एवं अन्य

आर्यसमाज रांची द्वारा ही संचालित आर्य वृद्ध सेवाश्रम में बुजुर्गों के साथ आर्यसमाज के नेता श्री शत्रुघ्नलाल आर्य जी एवं दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं अन्य

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों व आर्य संस्थाओं की ओर से

ऋषि बोधोत्सव एवं शिवरात्रि के अवसर पर आयोजित

विशाल ऋषि मेला

फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी 2070 विक्रमी तद्नुसार वीरवार 27 फरवरी, 2014

स्थान : रामलीला मैदान (तुर्कमान गेट साइड), नई दिल्ली-2

यज्ञ	विभिन्न कार्यक्रम		सार्वजनिक सभा
प्रात: 8 बजे	प्रात: 10 बजे से	★ भाषण प्रतियोगिता ★ खेलकूद प्रतियोगिता ★ विद्वत् संगोष्ठी ★ भजन-संगीत ★ सांस्कृतिक कार्यक्रम	दोपहर 1:30 से सायं 4 बजे

पृष्ठ 3 का शेष

दैवीय शक्तियों की बात कही जाती है वह सब जड़ हैं तथा उनमें जो भी शक्ति या सामर्थ्य है वह केवल ईश्वर प्रदत्त व निर्मित है तथा ईश्वर की सर्वव्यापकता के गुण के कारण है। सभी धर्म, मत, मजहब, सम्प्रदायों, गुरुडमों का अराध्यदेव भिन्न होने पर भी वह अलग-अलग न होकर एक मात्र सत्य-चित्त-आनन्द= सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा ही है। इन्हें भिन्न-भिन्न मानना या समझना अज्ञानता व अल्पज्ञता ही है। विज्ञान की भांति भक्तों, सन्मार्ग पर चलने वाले धार्मिक लोगों, उपासकों, स्तोताओं, ईश्वर की प्रार्थना में समय व्यतीत करने वालों को चिन्तन-मनन, विचार, ध्यान, स्वाध्याय कर एवं सत्य ईश्वर का निश्चय कर उसकी उपासना करना ही उचित व उपयोगी है एवं जीवन को उपादेय बनाता है। वेद, वैदिक साहित्य एवं सभी मत-मतान्तरों-धर्मों, गुरुद्वारों आदि की मान्यताओं, शिक्षाओं व सिद्धान्तों का अध्ययन कर परमात्मा का स्वरूप 'सच्चिदानन्द, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तरयामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टि कर्ता' ही निर्धारित होता है। जीवात्मा का स्वरूप सत्य, चित्त, आनन्द रहित, आनन्द की पूर्ति ईश्वर की उपासना से प्राप्तव्य, पुण्य-पाप कर्मों के कारण जन्म-मरण के बन्धन में फंसा हुआ, मोक्ष प्राप्ति तक जन्म-मरण लेता हुआ सद्कर्मो-पुण्यकर्मों व उपासना से ईश्वर का साक्षात्कार कर मोक्ष व मुक्ति को प्राप्त करता है। ईश्वर, जीव के अतिरिक्त तीसरी सत्ता जड़ प्रकृति की है जो स्वरूप में सूक्ष्म, कारण अवस्था में आकाश के समान व आकाश में सर्वत्र फैली हुई तथा सत्व-रज-तम की साम्यावस्था के रूप में विद्यमान होती है। सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर अपने ज्ञान व शक्ति से इसी कारण प्रकृति से कार्य प्रकृति-सृष्टि को रचकर इसे वर्तमान स्वरूप में परिणत करता है। इस प्रकार यह संसार वा ब्रह्माण्ड अस्तित्व में आता है। सृष्टि बनने के बाद 1,96,08,53,113 वर्ष व्यतीत होकर आज की अवस्था आई है। इससे पूर्व भी असंख्य बार यह सृष्टि बनी, उन सबकी प्रलय हुई और आगे भी असंख्य बार यह क्रम जारी रहेगा। मनुष्य जन्म धारण होने पर सत्कर्मो को करते हुए ईश्वर की उपासना से ईश्वर का साक्षात्कार करना जीवन का लक्ष्य है। यह लक्ष्य उपासना से जिसके साथ स्तुति, प्रार्थना, योगाभ्यास, योगसाधना, ध्यान, समाधि व भक्ति आदि भी जुड़ी हुई है, लक्ष्य की प्राप्ति होती है।

आर्य समाज सत्य को ग्रहण करने व असत्य को छोड़ने व छुड़ाने का एक अपूर्व व अनुपमेय आन्दोलन है। यह सर्व स्वीकार्य सिद्धान्त अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि का प्रबल समर्थक है। यद्यपि आर्य समाज का यह सिद्धान्त विज्ञान के क्षेत्र में शत-प्रतिशत लागू है परन्तु धर्म व मत-मतान्तरों-मजहबों में इस सिद्धान्त के प्रचलित न होने से संसार के सभी प्रचलित भिन्न-भिन्न मान्यता व सिद्धान्तों वाले मत-मतान्तरों-मजहबों के एकीकरण, एकरूपता व सर्वमान्य सिद्धान्तों के निर्माण व सबके द्वारा उसका पालन करने जिससे सबकी धार्मिक व सामाजिक उन्नति का लक्ष्य प्राप्त हो, की प्राप्ति में बाधा आ रही है। आर्य समाज सत्य के ग्रहण व असत्य के त्याग एवं अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि के सिद्धान्त को धर्म, मत-मतान्तर व मजहबों में भी प्रचलित व व्यवहृत कराना चाहता है। बिना इसके मनुष्य जाति का पूर्ण हित सम्भव नहीं है। मनुष्य का मत व धर्म सार्वभौमिक रूप से एक होना चाहिये। सत्याचरण व सत्याग्रह, सत्य मत के पर्याय है। पूर्ण सत्य मत की संसार में हर कसौटी की परीक्षा करने पर केवल वेद मत ही सत्य व यथार्थ सिद्ध होता है। यह वेद मत सायण-महीधर वाले वेद मत के अनुरूप नहीं अपितु पाणिनी, पंतजलि, यास्क, कणाद, गौतम, वेदव्यास, जैमिनी आदि व दयानन्द के वेद भाष्य, दर्शन व उपनिषद आदि ग्रन्थों के सिद्धान्तों के अनुरूप ही सकता है। इसी को आर्य समाज मान्यता देता है व सबको मानना चाहिये।

स्वामी दयानन्द ने पूना में समाज सुधारक ज्योतिबा फूले के निमंत्रण पर उनकी दलितों व पिछड़ों की कन्या पाठशाला में जाकर उन्हें ज्ञान प्राप्ति व जीवन को उन्नत बनाने की प्रेरणा की थी। इसी प्रकार से सब महापुरुषों के प्रति सद्भावना रखते हुए तथा उनके जीवन के गुणों को जानकर, गुण-ग्राहक बन कर, उनके प्रति सम्मान भावना रखते हुए, वेद व वैदिक साहित्य को पढ़कर अपनी सर्वांगीण उन्नति को प्राप्त करना चाहिये। इसी से समाज वास्तविक अर्थो में, जन्म से सब समान व बराबर, मनुष्य समाज बन पायेगा जिसमें किसी के साथ अन्याय नहीं होगा, किसी का शोषण नहीं होगा और न कोई किसी का शोषण करेगा। सबको आध्यात्मिक व भौतिक उन्नति के समान अवसर प्राप्त होगें। समाज गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित होगा जिसमें किसी से पक्षपात नहीं होगा व सबके साथ न्याय होगा। गुरु रविवास जी की प्रमुख शिक्षाओं में कहा गया है कि काव्यमय वेद व पुराण वर्णमाला के 34 अक्षरों से मिलकर बनाये गये हैं। महर्षि वेदव्यास का उदाहरण देकर कहा गया है कि ईश्वर के समान संसार में कोई नहीं है अर्थात् ईश्वर सर्वोपरि है। उनके अनुसार वह लोग बड़े भाग्यशाली है जो ईश्वर का ध्यान व योगाभ्यास करते हैं और अपने मन को ईश्वर में लगाकर एकाग्र होते हैं। इससे वह सभी द्वन्दों व समस्याओं से भविष्य में मुक्त हो जायेगें। गुरु रविदास जी कहते हैं कि जो व्यक्ति ईश्वर की दिव्य ज्योति से अपने हृदय को आलोकित करता है वह जन्म व मृत्यु के भय व दुख से मुक्त हो जाता है। उनका सन्देश था कि सब मनुष्य सब प्रकार से समान हैं। जाति, रंग व भिन्न 2 विश्वासों के होने पर भी सब समान ही हैं। उन्होंने वैश्विक भ्रातृत्व भावना अर्थात् 'वसुधैव कुटुम्बकम्' व सहनशीलता का सन्देश लोगों को दिया। उनके उपदेशों को 'अमृतवाणी' के नाम से प्रकाशित किया गया है जो हिन्दी, अग्रेजी व गुरुमुखी में उनके जन्म स्थान गोवधर्नपुरी, वाराणसी स्थित उनके संस्थान से उपलब्ध है। गुरुजी ने अपने समय में लोगों द्वारा अस्पर्शयता की जो भावना थी उसका भी विरोध कर उसके स्थान पर ईश्वर भक्ति को अपनाने का सन्देश दिया। वह वैष्णव सम्प्रदाय के अनुयायी व प्रचारक थे और राम व कृष्ण के जीवन की उदात्त शिक्षाओं का प्रचार भी करते थे। उनकी एक शिक्षा यह भी थी कि ईश्वर ने मनुष्य को बनाया है न कि मनुष्य ने ईश्वर को बनाया है। यह एक अति गम्भीर बात है जिस पर मनन करने पर अनेक सम्प्रदायों द्वारा इस शिक्षा के विपरीत व्यवहार देखा जाता है। बताया जाता है कि चित्तौड़ के महाराजा व महारानी उनके शिष्य बन गये थे। यह भी संयोग है कि उदयपुराधीश महाराजा उम्मेदसिंह जी स्वामी दयानन्द सरस्वती के परमभक्त थे। मीराबाई को भी गुरुजी की अनुयायी बताया जाता है। गुरु रविदास जी के कई स्तोत्र सिख धर्म पुस्तक गुरु ग्रन्थ साहिब में संग्रहीत हैं। सम्भवत: इसी से उनकी वाणी व शिक्षाओं, मान्यताओं व सिद्धान्तों की रक्षा हो सकी है। हम गुरु रविदास जी व अन्य धार्मिक गुरुओं को भी आंखें बन्द किये हुए ध्यान की मुद्रा में एकान्त स्थान पर उपासना करते हुए देखते हैं। एकान्त में आंखें बन्द कर उपासना करना निराकार, सर्वव्यापक, सर्वान्तरयामी, सच्चिदानन्द स्वरूप, सदैव व हर काल में आत्मा के अन्दर व बाहर उपलब्ध-विद्यमान व दु:ख निवारण कर सु,ख देने वाले ईश्वर की उपासना का प्रमाण है। हम तो यहां तक कहेगें कि यदि एक मूर्तिपूजक, मन्दिर या घर में, मूर्ति या किसी चित्र के समाने आंखें बन्द कर खड़ा होकर या बैठकर उपासना करता है, आरती या भजन गाता है, तो यह भी निराकार सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, ईश्वर की उपासना सिद्ध होती है। इसका कारण यह है कि कभी कोई किसी जीवित व दृश्य पदार्थ की उपासना आंखें बन्द करके नहीं करता अपितु आंखें खोलकर ही समस्त व्यवहार करता व किया जाता है। आंखे बन्द कर उपासना करना निश्चित ही सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, निराकार, जन्म व मृत्यु से रहित ईश्वर उपासना है। हमारे प्राचीन गुरुओं व सन्तों ने निराकार व सर्वव्यापक, जन्म, मृत्यु से रहित ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना का

- शेष पृष्ठ 8 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

17 बार पढ़ा और उसमें से हर बार एक नई चीज प्राप्त करने की घोषणा की, वह ऐसे ही नहीं की। इसी सत्यार्थ प्रकाश को सभा ने आप सबक सहयोग से नव युवा पीढ़ी को मात्र 10/- रुपये में प्रदान करने का निश्चय किय है। सत्यार्थ प्रकाश जिसका विक्रय मूल्य 50/- रुपये है, पर आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट की ओर से 20 /- रुपये की आर्थिक सहायता (सबसीडी) दी जा रही है। शेष 20/- प्रति पुस्तक के आर्थिक सहयोग हेतु आप सबका सहयोग अपेक्षित है।

अत: आपसे निवेदन है कि आप अपने परिवार की ओर से, आर्यसमाज की ओर से, संस्थान की ओर से, विद्यालय की ओर से कम से कम 100 सत्यार्थ पकाश हेतु 2000/- रुपये की सबसीडी अवश्य प्रदान करें। आप अपना सहयोग सीधे ही दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के बैंक खाते में जाम कराकर श्री विजय आर्य (9540040339) को सूचित करें ताकि आकपे राशि की रसीद भेजी जा सके। सहयोगी महानुभावों की सूची आर्यसन्देश में प्रकाशित की जाएगी।

इसी के साथ-साथ पुस्तक मेले में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को **'आर्यसमाज के स्वर्णिम सूत्र'** पत्रक नि:शुल्क वितरित किया जाएगा, जिसकी 5000 प्रतियां बनने पर 10000/- रुपये व्यय होगा, जिसके नीचे आपका/आपकी संस्था/आर्यसमाज का नाम लिखा होगा। यदि आप इस पत्रक को अपनी आर्यसमाज /संस्था की ओर से प्रकाशित कराकर वितरति करना चाहते हैं तो श्री विजय आर्य (9540040339) से सम्पर्क करें।

पुस्तक मेले में सत्यार्थ प्रकाश कम कीमत पर उपलब्ध कराने में सहयोग देने वाले महानुभावों की सूची

1.	आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली	20000/-
2.	आर्यसमाज सरीता विहार, नई दिल्ली	2000/-
3.	श्री जितेन्द्र खरबन्दा जी, कीर्ति नगर	1000/-
4.	श्रीमती अंजली कपूर, दयानन्द विहार, दिल्ली	10000/-
5.	आर्यसमाज इन्द्र पुरी, नई दिल्ली	500/-

आप भी अपने परिवार की ओर से, अपनी संस्था की ओर से अधिक सहयोग राशि भेजकर सत्यार्थ प्रकाश को जनसाधारण तक अधिकाधिक संख्या में पहुंचाने के लिए सहयोग दें। कृपया अपनी दान राशि नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम उपरोक्त बैंक खाते में जमा कराएं। **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।** - *महामन्त्री*

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में प्रबंधन में नवप्रवर्तन विषय पर त्रिदिवसीय सेमिनार

'समाज में असामाजिकता, साम्प्रदायिकता जैसे विषयों ने देश का प्रबंधन बिगाड़ा, इसके लिए विश्व में प्राचीन समय से ही भगवान् बुद्ध, मार्क्स, माओं महात्मा गांधी जैसे लोग हुए जिन्होंने देश में समाज में समरसता उत्पन्न कर विश्व को अहिंसा का संदेश दिया।' गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में प्रबंधन में नवप्रवर्तन विषय पर आयोजित त्रिदिवसीय सेमिनार के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रुप में संबोधित करते हुए उत्तराखण्ड के महामहिम राज्यपाल डा0 अजीज कुरैशी ने उक्त बात कही।

महामहिम ने कहा कि आज के दौर में गुरुकुलीय सभ्यता देश में होनी चाहिए, मानवता को बचाने के लिए गुरुकुल के संस्कारों और सभ्यता की आवश्यकता संपूर्ण विश्व को है। आज पूरे एशिया में केवल 14 प्रतिशत व्यक्ति संपन्नता का जीवन जी रहे हैं, बाकी भुखमरी, अराजकता का शिकार हैं।

मुख्यवक्ता आईटीएम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 योगेश उपाध्याय ने कहा कि आज नवप्रवर्तन की आवश्यकता केवल प्रबंधन या शिक्षा जगत में ही नहीं है, अपितु संपूर्ण विश्व में संपूर्ण समाज में है। प्रबंधन में नवप्रवर्तन विषय पर बोलते हुए प्रो0 उपाध्याय ने कहा कि नवप्रवर्तन में सभी की सहभागिता की आवश्यकता है। प्रो0 उपाध्याय ने कहा कि हमें चारों ओर ध्यान देना होगा। केवल ज्ञान से काम नहीं चलेगा, योग्यता और ज्ञान को हृदयंगम कर समाज को देने पर ही देश-विदेश में समाज सुधार या श्रेष्ठ प्रबंधन की बात की जा सकेगी। संसार में प्रतिबोध और शुचिता से बात बनेगी। शिक्षा की दशा और दिशा दोनों ही सुधारने, समाज मात्र के लिए उपयोगी बनाने पर ध्यान देना होगा।

आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय इंग्लैण्ड की प्रोफेसर एलिजाबेथ ने कहा कि भारतीय दर्शन प्रबंधन के नवप्रवर्तन पर अधिक सटीक बैठता है। हमें मनुष्य मात्र के बीच सामंजस्य स्थापित कर प्रबंधन की बात करनी होगी। मानसिक, आर्थिक, सामाजिक और पारिवारिक श्रेष्ठ प्रबंधन ही समाज की आवक्यकता है।

एमडीएच मसाले के मैनेजिंग डायरेक्टर महाशय धर्मपाल का संदेश पढ़कर सुनाया गया। कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार ने सभी अभ्यागतों का स्वागत किया। कार्यक्रम को कुलसचिव प्रो. विनोद शर्मा, प्रो. वी.के. सिंह, प्रो. एस.पी. सिंह ने संबोधित किया। संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन प्रो. पंकज मदान ने किया।

- डॉ0 प्रदीप कुमार जोशी, जनसम्पर्क अधिकारी

गुरुकुल हरिपुर ओड़िशा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल हरिपुर, जुनवानी पो. गोड़फूला, जि. नुआपड़ा (ओड़िशा) का चतुर्थ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं वार्षिकोत्सव 10,11,12 जनवरी 2014 को उत्साहवर्धक सम्पन्न हुआ। मंचीय कार्यक्रमों का उद्घाटन स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती ने किया। विभिन्न सम्मेलनों-**संस्कार रक्षा सम्मेलन, वैदिक परिवार सम्मेलन, गुरूकुल सम्मेलन, प्रेरक व्यक्तित्व सम्मान समारोह** आदि पूज्य स्वामी वेदानन्द सरस्वती, डॉ. सुद्युम्न आचार्य, स्वामी शान्तानन्द सरस्वती, आचार्य विद्यादेव, पं. शिवनारायण उपाध्याय, श्री ए.वी. स्वामी सांसद राजसभा, सेवावीर महात्मा वानप्रस्थ सत्यनाारायण आर्य, लेखवीर श्री खुशहालचन्द्र आर्य, श्री जयप्रकाश अग्रवाल, श्री आनन्ददेव आर्य, आचार्य अंशुदेव, श्री दीनानाथ वर्मा, आचार्य दयासागर, श्री सुधांशु, श्री बसन्त कुमार पण्डा, श्री प्रसन्न कुमार पाढ़ी, प्रो. विकास पण्डा, ई. सुधाकर पत्री, डॉ. कैलाशचन्द्र शास्त्री, आचार्य राहुलदेव शास्त्री तथा ओड़िशा के पचास के लगभग साधु-सन्त, नैष्ठिक ब्रह्मचारियों, विद्वानो, कर्मठ कार्यकर्ताओं की पावन उपस्थिति, अध्यक्षता एवं प्रेरक प्रवचनों से सम्पन्न हुआ। *- दिलीप कुमार जिज्ञासु, आचार्य*

शोक समाचार

श्री गोविन्दलाल जी का निधन

आर्यसमाज ग्रीन पार्क नई दिल्ली के मन्त्री एवं दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान एवं श्रद्धानन्द दलिताद्धार सभा में विभिन्न पदों पर कार्य करने वाले श्री गोविन्दलाल जी नागपाल का आज दिनांक 12 फरवरी, 2014 को निधन हो गया। वे लगभग 70 वर्ष के थे। श्री नागपाल जी सभा द्वारा आरम्भ की गई परियोजना 'आर्य परिवार विवाह योग्य परिचय सम्मेलन' के साथ आरम्भ से ही जुड़कर कार्य संचालन किया वे इस परियोजना के दिल्ली संयोजक थे।

वे दिल्ली सभा, सार्वदेशिक सभा तथा आर्य केन्द्रीय सभा द्वारा समय-समय आयोजित होने वाले समस्त कार्यक्रमों में सपरिवारं उत्साहपूर्वक भाग लेते थे।

श्री हरभगवान अरोड़ा का निधन

आर्यसमाज टैगोर गार्डन, नई दिल्ली की अनेक वर्षों से विभिन्न पदों पर रहते हुए सेवा करने वाले आर्य नेता श्री हरभगवान अरोड़ा जी का निधन हो गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

स्वामी जीवनानन्द सरस्वती जी के 90वें जन्मदिवस पर अमृत महोत्सव

15 फरवरी, 2014
आर्यसमाज सन्देश विहार, दिल्ली-34
सामवेद शतक यज्ञ : सायं 6 से 7 बजे
भजन-उपदेश : सायं 7 से 8 बजे
स्वागत एवं आशीर्वाद : रात्रि 8 बजे
मन्त्री, आर्यसमाज सन्देश विहार

आर्य समाज खेड़ा अफगान का 116वां धर्म जागृति महोत्सव

आर्य समाज खेड़ा अफगान सहारनपुर ने अपने स्थापना दिवस के एक सौ सोलहवें वर्ष में धर्म जागृति महोत्सव का आयोजन किया। इस अवसर पर डा. धीरज कुमार आर्य ने कहा कि वेद का ज्ञान केवल आर्यो-हिन्दुओं के लिये ही नहीं है यह संसार के सभी मनुष्यों के लिये है।

दिल्ली से पधारे पं. श्यामवीर राघव जी ने ईश्वर भक्ति, राष्ट्रभक्ति एवं परिवारों में जीने की कला को भजनों के माध्यम से रखकर जनता का मन मोह लिया।

पं. सुमित कुमार जी अपनी ओजस्वी वाणी के द्वारा युवाओं को वेदों मे बताये मार्ग पर चलकर राष्ट्र को बचाने का संकल्प लेने का आह्वान किया।

इस अवसर पर सातवीं वैदिक वैदिक ज्ञान वर्धिनी प्रतियोगिता की प्रथम विजेता कु. हिना (कन्या इंटर कॉलेज गंगोह) को 2100 रु., द्वितीय स्थान प्राप्त करने वालों को 1100 तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को 500 रुपए, तथा चतुर्थ स्थान वालों को 250 रुपए, प्रशस्ति पत्र तथा वैदिक साहित्य प्रदान करके पुरस्कृत किया गया।- *मन्त्री*

आवश्यकता है

आर्यसमाज का इतिहास जब तक लिखा जा चुका है उससे आगे आर्यसमाज का इतिहास लेखन का कार्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा आरम्भ किया जा रहा है। जो वैदिक विद्वान पूरी लगन एवं दृढ़ता से इतिहास लिखने की इच्छा रखते हों वे पत्र लिखकर सम्पर्क करें। उचित दक्षिणा एवं सहायक व्यवस्था प्रदान की जाएगी।
मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल एवं आर्यसमाज आसनसोल का वार्षिकोत्सव

10 से 16 फरवरी, 2014
समापन समारोह : 16 फरवरी, 2014
यज्ञ : प्रातः 8 से 9 बजे
प्रवचन : ब्र. राजसिंह आर्य
भजन : पं. देवेन्द्र आर्य
विशिष्ट अतिथि : आचार्य बलदेव जी
श्री मलय घटक, कृषि मन्त्री
सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं कवि सम्मेलन
दोहपर 2 से रत्रि 9 बजे तक
- जगदीश प्रसाद केडिया, प्रधान

वर की आवश्यकता

आर्य कन्या, ब्राह्मण गौत्र पाराशर 25 वर्ष, 5'5'' वजन 50 किलो, रंग गोरा, सुन्दर सुशील, एम.सी.ए., एम.एन.सी. में सॉफ्टवेयर इंजीनियर (ट्रनी) कार्यरत, पिता हरियाण राज्य विभाग में लेखाधिकारी, माता बी.ए.एम.एड. घरेलू, भाई बीटेक (अन्तिम वर्ष) हेतु सुयोग्य, सुन्दर सुशील कार्य वर चाहिए। इच्छुक आर्य परिवार सम्पर्क करें -
दिनेश कुमार आर्य, फरीदाबाद शहर
मो. 09968288806, 9868884665

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का नया प्रचार वाहन सेवारत

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा एक नया प्रचार वाहन इको-कार्गो की व्यवस्था की गई है। यह प्रचार वाहन दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र तथा आस-पास के क्षेत्रों में वेद प्रचार के कार्य के साथ-साथ आर्यसमाजों को हवन सामग्री तथा वैदिक साहित्य पहुंचाएगा।

दिल्ली एवं आस-पास के समस्त आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं सहायक संगठनों से निवेदन है कि वे इस प्रचार वाहन की सेवाएं लें। यदि आप अपने वार्षिकोत्सव, स्थापना दिवस या अन्य किसी उत्सव के अवसर पर वैदिक साहित्य के प्रचारार्थ स्टाल लगवाना चाहें तो भी इसकी सेवाएं श्री विजय आर्य (9540040339) पर सम्पर्क करके प्राप्त कर सकते हैं।- *विनय आर्य, महामन्त्री*

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 10 फरवरी, 2014 से रविवार 16 फरवरी, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 13/14 फरवरी, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 12 फरवरी, 2014

वसंत हमारा है त्यौहार, वैलेंटाइन नहीं स्वीकार

पश्चिम का यह मकड़ जाल है,
जिसमें डूबा भारत विशाल है।
वैदिक संस्कृति पर यह प्रहार, वैलेंटाइन नहीं स्वीकार।।

दो देहों का है यह घर्षण,
नहीं दिलों का है आकर्षण।
युवा वर्ग की भटकी कार, वैलेंटाइन नहीं स्वीकार।।

एक दिवस की झूठी शान है,
लुटती इज्जत आन बान है।
भारत माता शर्मसार, वैलेंटाइन नहीं स्वीकार।।

आओ सभी वसंत मनायें,
ऋषि मुनियों की शान बढायें।
विमल प्रेममय हो संसार, वैलेंटाइन नहीं स्वीकार।।

– विमलेश बंसल 'आर्या'

329 द्वितीय तल संत नगर, पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली–65

प्रतिष्ठा में,

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

मात्र 70/– किलो (5,10, 20 किलो की पैकिंग)

अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी उपलब्ध

प्राप्ति स्थान: दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001, दूरभाष - 23360150

पृष्ठ 6 का शेष

प्रचार–प्रसार किया या नहीं, नहीं किया तो क्यों नहीं किया, हम पाठकों को स्वयं विचार कर निर्णय करने के लिए छोड़ते हैं। हम केवल यह अनुमान लगाते हैं कि आंखे बन्द कर, ध्यान की मुद्रा में एकान्त में बैठ उपासना कर रहे हमारे प्राचीन गुरु ईश्वर के निश्चित ही सच्चिदानन्द निराकार, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सूक्ष्मातिसूक्ष्म, अपरिवर्तनीय, जन्म–मरण रहित ईश्वर की ही उपासना करते थे। हमें भी ऐसा ही करना चाहिये।

गुरु रविदास जी के जयन्ती पर हम यह समझते है कि प्रत्येक आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्ति को सत्य की खोज करनी चाहिये। सत्य कहीं से भी मिले उसे शिरोधार्य करना चाहिये। यह चिन्ता नही करनी चाहिये कि उससे उसके मत को हानि हो सकती है। सत्य संसार में सबसे बढ़कर है। सत्य से बढ़कर संसार में कुछ भी नहीं है। सभी मतों के अनुयायियों को सभी मतों सहित वेद, दर्शन व उपनिषदों का अध्ययन अवश्यक है व इसे करना ही चाहिये तभी वह सत्य धर्म को प्राप्त हो सकेगें।

ईश्वर एक है जिसने मनुष्यों को बनाया है। इस लिए ईश्वर के बनाये हुए सभी मनुष्यों का धर्म भी एक ही है। जो इस सत्य को जानकर व्यवहार करता है उसकी उन्नति होती है और जो मत–मतान्तरों के अन्धकार में फंसा रहता है उसका जीवन सफल नहीं होता। आइये, मानव जीवन को सफल करने के वेद, उपनिषद, दर्शन, सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, आर्या– भिविनय, रामायण, महाभारत व सभी मतों के ग्रन्थों को पढ़कर सत्य धर्म का मंथन करें तथा परीक्षा में सत्य पायी जाने वाली शिक्षा, मान्यताओं, सिद्धान्तों का अध्ययन कर सत्य को अपनायें और उसे अपने आचरण में लाकर अपने जीवनों को सफल करें। *–मनमोहन कुमार आर्य*

196, चुक्खूवाला–2, देहरादून–1

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर